

विनय पत्रिका का भाषा

डॉ गणेश शंकर पांडे
सहायक अध्यापक
हिंदी विभाग
दुर्गा कॉलेज रायपुर

1. प्रस्तावना

विनय पत्रिका गोस्वामी तुलसीदास की महत्त्वपूर्ण कृति है।
इसमें भक्ति, श्रद्धा और विनम्रता का उत्कृष्ट चित्रण है।
इस कृति की भाषा विशुद्ध भक्तिरस को प्रकट करने वाली है।

2. भाषा की विशेषताएँ

(a) अवधी का प्रयोग

विनय पत्रिका की भाषा मुख्यतः अवधी है।
अवधी भाषा लोक में प्रचलित होने के कारण सहज, सरल और जनसामान्य द्वारा
आसानी से समझी जा सकती है।

(b) संस्कृतनिष्ठ शब्दावली

तुलसीदास जी ने संस्कृतनिष्ठ शब्दों का पर्याप्त प्रयोग किया है।

इससे भाषा में गम्भीरता और गरिमा आती है।

(c) ब्रजभाषा का प्रयोग

कहीं-कहीं ब्रजभाषा का भी प्रयोग मिलता है।

इससे भाषा अधिक मधुर और भावपूर्ण बन गई है।

(d) अलंकारिकता

अनुप्रास, उपमा, रूपक आदि अलंकारों का प्रयोग भाषा को काव्यात्मक सौंदर्य प्रदान करता है।

(e) सरलता और सहजता

भाषा सरल और सीधी है, जो हृदय को तुरंत स्पर्श करती है।

जटिलता के स्थान पर भावनात्मकता और आत्मीयता प्रकट होती है।

(f) भावप्रवणता

भाषा में विनय, प्रार्थना और भक्ति-भाव अत्यंत प्रबल हैं।

तुलसीदास जी की आत्मसमर्पण भावना भाषा में स्पष्ट झलकती है।

3. निष्कर्ष

विनय पत्रिका की भाषा लोकप्रचलित अवधी और संस्कृतनिष्ठ शब्दों का सुन्दर मिश्रण है।

यह भाषा भक्ति, श्रद्धा और आत्मसमर्पण की भावना को प्रभावी ढंग से व्यक्त करती है।

तुलसीदास ने इसे सरल, मधुर, भावपूर्ण और हृदयग्राही बनाया है।